॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहिता — पद पाठः

प्रथमकाण्डे द्वितीयः प्रश्नः

अग्निष्टोमे क्रयः

ॐ नमः परमात्मने । श्री गुरुभ्यो नमः । हरिः ॐ

आपः। उन्दन्तु। जीवसे। दीर्घायुत्वायेति दीर्घायु—त्वाय। वर्चसे। ओषधे। त्रायस्व। एनम्। स्वधित इति स्व—धिते। मा। एनम्। हिꣳसीः। देवश्रूरिति देव—श्रूः। एतानि। प्रेति। वपे। स्वस्ति। उत्तराणीत्युत्—तराणि। अशीय। आपः। अस्मान्। मातरः। शुन्धन्तु। घृतेन। नः। घृतपुव इति घृत—पुवः। पुनन्तु। विश्वम्। अस्मत्। प्रेति। वहन्तु। रिप्रम्। उदिति। आभ्यः। शुचिः। एति। पूतः। एमि। सोमस्य। तनूः। असि। तनुवम्। मे। पाहि। महीनाम्। पयः। असि। वर्चोधा इति वर्चः—धाः। असि। वर्चः। १ (५०) ॥ [१] ॥ मयि। धेहि। वृत्रस्य। कनीनिका। असि। चख्षुष्पा इति चख्षुः—पाः। असि। चख्षुः। मे। पाहि। चित्पतिरिति चित्—पतिः। त्वा। पुनातु। वाक्पतिरिति वाक्—पतिः। त्वा। पुनातु। देवः। त्वा। सविता। पुनातु। अच्छिद्रेण। पवित्रेण। वसोः। सूर्यस्य। रश्मिभिरिति रश्मि—भिः। तस्य। ते। पवित्रपत इति पवित्र—पते। पवित्रेण। यस्मै। कम्। पुने। तत्। शकेयम्। एति। वः। देवासः। ईमहे। सत्यधर्माण इति सत्य—धर्माणः। अद्ध्वरे। यत्। वः। देवासः। आगुर इत्या—गुरे। यज्ञियासः। हवामहे। इन्द्राग्नी इतीन्द्र—अग्नी। द्यावापृथिवी इति द्यावा—पृथिवी। आपः। ओषधीः। त्वम्। दीख्षाणाम्। अधिपतिरित्यधि—पतिः। असि। इह। मा। सन्तम्। पाहि ॥ [२] ॥

(वर्चे ओषधीरष्टौ च) ॥ १ ॥

आकूत्या इत्या—कूत्यै। प्रयुज इति प्र—युजे। अग्नये। स्वाहा। मेधायै। मनसे। अग्नये। स्वाहा। दीक्षायै। तपसे। अग्नये। स्वाहा। सरस्वत्यै। पूष्णे। अग्नये। स्वाहा। आपः। देवीः। बृहतीः। विश्वशंभुव इति विश्व—शंभुवः। द्यावापृथिवी इति द्यावा—पृथिवी। उरु। अन्तरिक्षम्। बृहस्पतिः। नः। हविषा। वृधातु। स्वाहा। विश्वे। देवस्य। नेतुः। मर्तः। वृणीत। सख्यम्। विश्वे। रायः। इषुद्ध्यसि। द्युम्नम्। वृणीत। पुष्यसे। स्वाहा। ऋख्सामयोरित्यृक्—सामयोः। शिल्पे इति। स्थः। ते इति। वाम्। एति। रभे। ते इति। मा। ३ (५०) ॥ [३] ॥ पातम्। एति। अस्य। यज्ञस्य। उदृच इत्युत्—ऋचः। इमाम्। धियम्। शिख्षमाणस्य। देव। क्रतुम्। दख्षम्। वरुण। समिति। शिशाधि। यया। अतीति। विश्वा। दुरितेति दुः—इता। तरेम। सुतर्माणमिति सु—तर्माणम्। अधीति। नावम्। रुहेम। ऊर्क्। असि। आङ्गिरसी। ऊर्णम्रदा इत्यूर्ण—म्रदाः। ऊर्जम्। मे। यच्छ। पाहि। मा। मा। मा। हिꣳसीः। विष्णोः। शर्म। असि। शर्म। यजमानस्य। शर्म। मे। यच्छ। नख्षत्राणाम्। मा। अतीकाशात्। पाहि। इन्द्रस्य। योनिः। असि। ४ (५०) ॥ [४] ॥ मा। मा। हिꣳसीः। कृष्यै। त्वा। सुसस्याया इति सु—सस्यायै। सुपिप्पलाभ्य इति सु—पिप्पलाभ्यः। त्वा। ओषधीभ्य इत्योषधि—भ्यः। सूपस्था इति सु—उपस्थाः। देवः। वनस्पतिः। ऊद्र्ध्वः। मा। पाहि। एति। उदृच इत्युत्—ऋचः। स्वाहा। यज्ञम्। मनसा। स्वाहा। द्यावापृथिवीभ्यामिति द्यावा—पृथिवीभ्याम्। स्वाहा। उरोः। अन्तरिख्षात्। स्वाहा। यज्ञम्। वातात्। एति। रभे ॥ [५] ॥

(मा योनिरसि त्रिꣳशच्च) ॥ २ ॥

दैवीम्। धियम्। मनामहे। सुमृडीकामिति सु—मृडीकाम्। अभिष्टये। वर्चोधामिति वर्चः—धाम्। यज्ञवाहसमिति यज्ञ—वाहसम्। सुपारेति सु—पारा। नः। असत्। वशे॥ ये। देवाः। मनोजाता इति मनः—जाताः। मनोयुज इति मनः—युजः। सुदख्षा इति सु—दख्षाः। दख्षपितार इति दख्ष—पितारः। ते। नः। पान्तु। ते। नः। अवन्तु। तेभ्यः। नमः। तेभ्यः। स्वाहा।

अग्ने। त्वम्। स्विति। जागृहि। वयम्। स्विति। मन्दिषीमहि। गोपाय। नः। स्वस्तये। प्रबुध इति प्र—बुधे। नः। पुनः। ददः॥ त्वम्। अग्ने। व्रतपा इति व्रत—पाः। असि। देवः। एति। मर्त्येषु। आ॥ त्वम्। ६ (५०) ॥ [६] ॥ यज्ञेषु। ईड्यः॥ विश्वे। देवाः। अभीति। माम्। एति। अववृत्रन्न्। पूषा। सन्या। सोमः। राधसा। देवः। सविता। वसोः। वसुदावेति वसु—दावा। रास्व। इयत्। सोम। एति। भूयः। भर। मा। पृणन्न्। पूर्त्या। वीति। राधि। मा। अहम्। आयुषा। चन्द्रम्। असि। मम। भोगाय। भव। वस्त्रम्। असि। मम। भोगाय। भव। उस्रा। असि। मम। भोगाय। भव। हयः। असि। मम। भोगाय। भव। ७ (५०) ॥ [७] ॥ छागः। असि। मम। भोगाय। भव। मेषः। असि। मम। भोगाय। भव। वायवे। त्वा। वरुणाय। त्वा। निर्ऋत्या इति निः—ऋत्यै। त्वा। रुद्राय। त्वा। देवीः। आपः। अपाम्। नपात्। यः। ऊर्मिः। हविष्यः। इन्द्रियावानितीन्द्रिय—वान्। मदिन्तमः। तम्। वः। मा। अवेति। क्रमिषम्। अच्छिन्नम्। तन्तुम्। पृथिव्याः। अन्विति। गेषम्। भद्रात्। अभीति। श्रेयः। प्रेति। इहि। बृहस्पतिः। पुरएतेति पुरः—एता। ते। अस्तु। अथ। ईम्। अवेति। स्य। वरे। एति। पृथिव्याः। आरे। शत्रून्। कृणुहि। सर्ववीर इति सर्व—वीरः। एति। इदम्। अगन्म। देवयजनमिति देव—यजनम्। पृथिव्याः। विश्वे। देवाः। यत्। अजुषन्त। पूर्वे। ऋख्सामाभ्यामित्यृख्साम—भ्याम्। यजुषा। सन्तरन्त इति सं—तरन्तः। रायः। पोषेण। समिति। इषा। मदेम ॥ [८] ॥

(आ त्वम् हयोसि मम भोगाय भव स्य पञ्चविꣳ शतिश्च) ॥ ३ ॥

इयम्। ते। शुक्र। तनूः। इदम्। वर्चः। तया। समिति। भव। भ्राजम्। गच्छ। जूः। असि। धृता। मनसा। जुष्टा। विष्णवे। तस्याः। ते। सत्यसवस इति सत्य—सवसः। प्रसव इति प्र—सवे। वाचः। यन्त्रम्। अशीय। स्वाहा। शुक्रम्। असि। अमृतम्। असि। वैश्वदेवमिति वैश्व—देवम्। हविः। सूर्यस्य। चख्षुः। एति। अरुहम्। अग्नेः। अख्ष्णः। कनीनिकाम्। यत्। एतशेभिः। ईयसे। भ्राजमानः। विपश्चिता। चित्। असि। मना। असि। धीः। असि। दख्षिणा। ९ (५०) ॥ [९] ॥ असि। यज्ञिया। असि। ख्षत्रिया। असि। अदितिः। असि। उभयतश्शी-

ष्णींत्युभयतः—शीष्णीं। सा। नः। सुप्राचीति सु—प्राची। सुप्रतीचीति सु—प्रतीची। समिति। भव। मित्रः। त्वा। पदि। बद्ध्नातु। पूषा। अद्ध्वनः। पातु। इन्द्राय। अद्ध्यक्षायेत्यधि—अक्षाय। अन्विति। त्वा। माता। मन्यताम्। अन्विति। पिता। अन्विति। भ्राता। सगर्भ्य इति स—गर्भ्यः। अन्विति। सखा। सयूथ्य इति स—यूथ्यः। सा। देवि। देवम्। अच्छ। इहि। इन्द्राय। सोमम्। रुद्रः। त्वा। एति। वर्तयतु। मित्रस्य। पथा। स्वस्ति। सोमसखेति सोम—सखा। पुनः। एति। इहि। सह। रय्या ॥ [१०] ॥

(दक्षिणासोमसखापञ्च च) ॥ ४ ॥

वस्वी। असि। रुद्रा। असि। अदितिः। असि। आदित्या। असि। शुक्रा। असि। चन्द्रा। असि। बृहस्पतिः। त्वा। सुम्ने। रण्वतु। रुद्रः। वसुभिरिति वसु—भिः। एति। चिकेतु। पृथिव्याः। त्वा। मूर्द्धन्न्। एति। जिघर्मि। देवयजन इति देव—यजने। इडायाः। पदे। घृत-वतीति घृत—वति। स्वाहा। परिलिखितमिति परि—लिखितम्। रक्षः। परिलिखिता इति परि—लिखिताः। अरातयः। इदम्। अहम्। रक्षसः। ग्रीवाः। अपीति। कृन्तामि। यः। अस्मान्। द्वेष्टि। यम्। च। वयम्। द्विष्मः। इदम्। अस्य। ग्रीवाः। ११ (५०) ॥ [११] ॥ अपीति। कृन्तामि। अस्मे इति। रायः। त्वे इति। रायः। तोते। रायः। समिति। देवि। देव्या। उर्वश्या। पश्यस्व। त्वष्टीमती। ते। सपेय। सुरेता इति सु—रेताः। रेतः। दधाना। वीरम्। विदेय। तव। सन्दृशीति सं—दृशि। मा। अहम्। रायः। पोषेण। वीति। योषम् ॥ [१२] ॥

(अस्य ग्रीवाएकान्न त्रि(ग्म्) शच्च) ॥ ५ ॥

अꣳशुना। ते। अꣳशुः। पृच्यताम्। परुषा। परुः। गन्धः। ते। कामम्। अवतु। मदाय। रसः। अच्युतः। अमात्यः। असि। शुक्रः। ते। ग्रहः। अभीति। त्यम्। देवम्। सवितारम्। ऊण्योः। कविक्रतुमिति कवि—क्रतुम्। अर्चामि। सत्यसवसमिति सत्य—सवसम्। रत्नधामिति रत्न—धाम्। अभीति। प्रियम्। मतिम्। ऊर्द्ध्वा। यस्य। अमतिः। भाः। अदिद्युतत्। सवी-मनि। हिरण्यपाणिरिति हिरण्य—पाणिः। अमिमीत। सुक्रतुरिति सु—क्रतुः। कृपा। सुवः॥

प्रजाभ्य इति प्र—जाभ्यः। त्वा। प्राणायेति प्र—अनाय। त्वा। व्यानायेति वि—अनाय। त्वा। प्रजा इति प्र—जाः। त्वम्। अनु। प्रेति। अनिहि। प्रजा इति प्र—जाः। त्वाम्। अनु। प्रेति। अनन्तु ॥ [१३] ॥

(अनु सप्त च) ॥ ६ ॥

सोमम्। ते। क्रीणामि। ऊर्जस्वन्तम्। पयस्वन्तम्। वीर्यावन्तमिति वीर्य—वन्तम्। अभिमातिषाहमित्यभिमाति—साहम्। शुक्रम्। ते। शुक्रेण। क्रीणामि। चन्द्रम्। चन्द्रेण। अमृतम्। अमृतेन। सम्यत्। ते। गोः। अस्मे इति। चन्द्राणि। तपसः। तनूः। असि। प्रजापतेरिति प्रजा—पतेः। वर्णः। तस्याः। ते। सहस्रपोषमिति सहस्र—पोषम्। पुष्यन्त्याः। चरमेण। पशुना। क्रीणामि। अस्मे इति। ते। बन्धुः। मयि। ते। रायः। श्रयन्ताम्। अस्मे इति। ज्योतिः। सोमविक्रयिणीति सोम—विक्रयिणि। तमः। मित्रः। नः। एति। इहि। सुमित्रधा इति सुमित्र—धाः। इन्द्रस्य। ऊरुम्। एति। विश। दक्षिणम्। उशन्न्। उशन्तम्। स्योनः। स्योनम्। स्वान। भ्राज। अङ्घारे। बंभारे। हस्त। सुहस्तेति सु—हस्त। कृशानविति कृश—अनो। एते। वः। सोमक्रयणा इति सोम—क्रयणाः। तान्। रक्षध्वम्। मा। वः। दभन्न् ॥ [१४] ॥

(ऊरुंद्वाविꣳशतिश्च) ॥ ७ ॥

उदिति। आयुषा। स्वायुषेति सु—आयुषा। उदिति। ओषधीनाम्। रसेन। उदिति। पर्जन्यस्य। शुष्मेण। उदिति। अस्थाम्। अमृतान्। अनु॥ उरु। अन्तरिक्षम्। अन्विति। इहि। अदित्याः। सदः। असि। अदित्याः। सदः। एति। सीद। अस्तभ्नात्। द्याम्। ऋषभः। अन्तरिक्षम्। अमिमीत। वरिमाणम्। पृथिव्याः। एति। असीदत्। विश्वा। भुवनानि। सम्राडिति सं—राट्। विश्वा। इत्। तानि। वरुणस्य। व्रतानि। वनेषु। वीति। अन्तरिक्षम्। ततान। वाजम्। अर्वथ्स्वित्यर्वत्—सु। पयः। अघ्नियासु। हृथ्स्विति हृत्—सु। १५ (५०) ॥ [१५] ॥

क्रतुम्। वरुणः। विक्षु। अग्निम्। दिवि। सूर्यम्। अदधात्। सोमम्। अद्रौ। उदिति। उ।

त्यम्। जातवेदसमिति जात—वेदसम्। देवम्। वहन्ति। केतवः॥ दृशे। विश्वाय। सूर्यम्॥ उस्रौ। एति। इतम्। धूर्षाहाविति धूः—साहौ। अनश्रू इति। अवीरहणावित्यवीर—हनौ। ब्रह्म-चोदनाविति ब्रह्म—चोदनौ। वरुणस्य। स्कंभनम्। असि। वरुणस्य। स्कंभसर्जनमिति स्कंभ—सर्जनम्। असि। प्रत्यस्त इति प्रति—अस्तः। वरुणस्य। पाशः ॥ [१६] ॥

(हृथ्सुपञ्चत्रिꣳशाच्च) ॥ ८ ॥

प्रेति। च्यवस्व। भुवः। पते। विश्वानि। अभीति। धामानि। मा। त्वा। परिपरीति परि—परी। विदत्। मा। त्वा। परिपन्थिन इति परि—पन्थिनः। विदन्न्। मा। त्वा। वृकाः। अघायव इत्यघ—यवः। मा। गन्धर्वः। विश्वावसुरिति विश्व—वसुः। एति। दघत्। श्येनः। भूत्वा। परेति। पत। यजमानस्य। नः। गृहे। देवैः। सꣳस्कृतम्। यजमानस्य। स्वस्त्य-यनीति स्वस्ति—अयनी। असि। अपीति। पन्थाम्। अगस्महि। स्वस्तिगामिति स्वस्ति—गाम्। अनेहसम्। येन। विश्वाः। परीति। द्विषः। वृणक्ति। विन्दते। वसु। नमः। मित्रस्य। वरुणस्य। चक्षसे। महः। देवाय। तत्। ऋतम्। सपर्यत। दूरेदृश इति दूरे—दृशे। देव-जातायेति देव—जाताय। केतवे। दिवः। पुत्राय। सूर्याय। शꣳसत। वरुणस्य। स्कंभनम्। असि। वरुणस्य। स्कंभसर्जनमिति स्कंभ—सर्जनम्। असि। उन्मुक्त इत्युत्—मुक्तः। वरु-णस्य। पाशः ॥ [१७] ॥

(मित्रस्यत्रयोविꣳशतिश्च) ॥ ९ ॥

अग्नेः। आतिथ्यम्। असि। विष्णवे। त्वा। सोमस्य। आतिथ्यम्। असि। विष्णवे। त्वा। अतिथेः। आतिथ्यम्। असि। विष्णवे। त्वा। अग्नये। त्वा। रायस्पोषदावन्न इति रायस्पोष—दावन्ने। विष्णवे। त्वा। श्येनाय। त्वा। सोमभृत इति सोम—भृते। विष्णवे। त्वा। या। ते। धामानि। हविषा। यजन्ति। ता। ते। विश्वा। परिभूरिति परि—भूः। अस्तु। यज्ञम्। गयस्फान इति गय—स्फानः। प्रतरण इति प्र—तरणः। सुवीर इति सु—वीरः। अवीरहेत्यवीर—हा।

प्रेति। चर। सोम। दुर्यान्। अदित्याः। सदः। असि। अदित्याः। सदः। एति। १८ (५०) ॥ [१८] ॥ सीद। वरुणः। असि। धृतव्रत इति धृत—व्रतः। वारुणम्। असि। शंय्योरिति शं—योः। देवानाम्। सख्यात्। मा। देवानाम्। अपसः। छित्स्महि। आपतय इत्या—पतये। त्वा। गृह्णामि। परिपतय इति परि—पतये। त्वा। गृह्णामि। तनूनप्त्र इति तनू—नप्त्रे। त्वा। गृह्णामि। शाक्वराय। त्वा। गृह्णामि। शक्मन्न्। ओजिष्ठाय। त्वा। गृह्णामि। अनाधृष्टमित्यना—धृष्टम्। असि। अनाधृष्यमित्यना—धृष्यम्। देवानाम्। ओजः। अभिशस्तिपा इत्यभिशस्ति—पाः। अनभिशस्तेन्यमित्यनभि—शस्तेन्यम्। अन्विति। मे। दीक्षाम्। दीक्षापतिरिति दीक्षा—पतिः। मन्यताम्। अन्विति। तपः। तपस्पतिरिति तपः—पतिः। अञ्जसा। सत्यम्। उपेति। गेषम्। सुविते। मा। धाः ॥ [१९] ॥

(आ मैकम्च) ॥ १० ॥

अꣳशुरꣳशुरित्यꣳशुः—अꣳशुः। ते। देव। सोम। एति। प्यायताम्। इन्द्राय। एकधनविद इत्येकधन—विदे। एति। तुभ्यम्। इन्द्रः। प्यायताम्। एति। त्वम्। इन्द्राय। प्यायस्व। एति। प्यायय। सखीन्। सन्या। मेधया। स्वस्ति। ते। देव। सोम। सुत्याम्। अशीय। एष्टः। रायः। प्रेति। इषे। भगाय। ऋतम्। ऋतवादिभ्य इत्यृतवादि—भ्यः। नमः। दिवे। नमः। पृथिव्यै। अग्ने। व्रतपत इति व्रत—पते। त्वम्। व्रतानाम्। व्रतपतिरिति व्रत—पतिः। असि। या। मम। तनूः। एषा। सा। त्वयि। २० (५०) ॥ [२०] ॥ या। तव। तनूः। इयम्। सा। मयि। सह। नौ। व्रतपत इति व्रत—पते। व्रतिनोः। व्रतानि। या। ते। अग्ने। रुद्रिया। तनूः। तया। नः। पाहि। तस्याः। ते। स्वाहा। या। ते। अग्ने। अयाशयेत्यया—शया। रजाशयेति रजा—शया। हराशयेति हरा—शया। तनूः। वर्षिष्ठा। गह्वरेष्ठेति गह्वरे—स्था। उग्रम्। वचः। अपेति। अवधीम्। त्वेषम्। वचः। अपेति। अवधीम्। स्वाहा ॥ [२१] ॥

(त्वयिचत्वारिꣳशच्च) ॥ ११ ॥

वित्तायनीति वित्त—अयनी। मे। असि। तिक्तायनीति तिक्त—अयनी। मे। असि। अवतात्। मा। नाथितम्। अवतात्। मा। व्यथितम्। विदेः। अग्निः। नभः। नाम। अग्ने। अङ्गिरः। यः। अस्याम्। पृथिव्याम्। असि। आयुषा। नाम्ना। एति। इहि। यत्। ते। अनाधृष्टमित्यना—धृष्टम्। नाम। यज्ञियम्। तेन। त्वा। एति। दधे। अग्ने। अङ्गिरः। यः। द्वितीयस्याम्। तृतीयस्याम्। पृथिव्याम्। असि। आयुषा। नाम्ना। एति। इहि। यत्। ते। अनाधृष्टमित्यना—धृष्टम्। नाम। २२ (५०) ॥ [२२] ॥ यज्ञियम्। तेन। त्वा। एति। दधे। सिꣳहीः। असि। महिषीः। असि। उरु। प्रथस्व। उरु। ते। यज्ञपतिरिति यज्ञ—पतिः। प्रथताम्। ध्रुवा। असि। देवेभ्यः। शुन्धस्व। देवेभ्यः। शुंभस्व। इन्द्रघोष इतीन्द्र—घोषः। त्वा। वसुभिरिति वसु—भिः। पुरस्तात्। पातु। मनोजवा इति मनः—जवाः। त्वा। पितृभिरिति पितृ—भिः। दख्षिणतः। पातु। प्रचेता इति प्र—चेताः। त्वा। रुद्रैः। पश्चात्। पातु। विश्वकर्मेति विश्व—कर्मा। त्वा। आदित्यैः। उत्तरत इत्युत्—तरतः। पातु। सिꣳहीः। असि। सपत्नसाहीति सपत्न—साही। स्वाहा। सिꣳहीः। असि। सुप्रजावनिरिति सुप्रजा—वनिः। स्वाहा। सिꣳहीः। २३ (५०) ॥ [२३] ॥ असि। रायस्पोषवनिरिति रायस्पोष—वनिः। स्वाहा। सिꣳहीः। असि। आदित्यवनिरित्यादित्य—वनिः। स्वाहा। सिꣳहीः। असि। एति। वह। देवान्। देवयत इति देव—यते। यजमानाय। स्वाहा। भूतेभ्यः। त्वा। विश्वायुरिति विश्व—आयुः। असि। पृथिवीम्। दृꣳह। ध्रुवख्षिदिति ध्रुव—ख्षित्। असि। अन्तरिख्षम्। दृꣳह। अच्युतख्षिदित्यच्युत—ख्षित्। असि। दिवम्। दृꣳह। अग्नेः। भस्म। असि। अग्नेः। पुरीषम्। असि ॥ [२४] ॥

(नामसुप्रजावनिः स्वाहा सिम्ꣳहीःपञ्चत्रिꣳशच्च) ॥ १२ ॥

⋆

युञ्जते। मनः। उत। युञ्जते। धियः। विप्राः। विप्रस्य। बृहतः। विपश्चितः॥ वीति। होत्राः। दधे। वयुनाविदिति वयुन—वित्। एकः। इत्। मही। देवस्य। सवितुः। परिष्टुतिरिति परि—स्तुतिः॥ सुवागिति सु—वाक्। देव। दुर्यान्। एति। वद। देवश्रुताविति देव—श्रुतौ। देवेषु। एति। घोषेथाम्। एति। नः। वीरः। जायताम्। कर्मण्यः। यम्। सर्वे। अनुजीवामेत्यनु—जीवाम। यः। बहूनाम्। असत्। वशी॥ इदम्। विष्णुः। वीति। चक्रमे। त्रेधा। नीति।

दुधे। पदम्॥ समूढमिति सम्—ऊढम्। अस्य। २५ (५०) ॥ [२५] ॥ पाꣳसुरे। इरावती इतीरा—वती। धेनुमती इति धेनु—मती। हि। भूतम्। सूयवसिनी इति सु—यवसिनी। मनवे। यशस्ये इति॥ वीति। अस्कभ्नात्। रोदसी इति। विष्णुः। एते इति। दाधार। पृथिवीम्। अभितः। मयूखैः॥ प्राची इति। प्रेति। इतम्। अद्ध्वरम्। कल्पयन्ती इति। ऊर्द्ध्वम्। यज्ञम्। नयतम्। मा। जीह्वरतम्। अत्र। रमेथाम्। वर्ष्मन्न्। पृथिव्याः। दिवः। वा। विष्णो। उत। वा। पृथिव्याः। महः। वा। विष्णो। उत। वा। अन्तरिख्षात्। हस्तौ। पृणस्व। बहुभिरिति बहु—भिः। वसव्यैः। आ*। प्रेति। यच्छ। २६ (५०) ॥ [२६] ॥ दख्षिणात्। एति। उत। सव्यात्॥ विष्णोः। नुकम्। वीर्याणि। प्रेति। वोचम्। यः। पार्थिवानि। विमम इति वि—ममे। रजाꣳसि। यः। अस्कभायत्। उत्तरमित्युत्—तरम्। सधस्थमिति सध—स्थम्। विचक्रमाण इति वि—चक्रमाणः। त्रेधा। उरुगाय इत्युरु—गायः। विष्णोः। रराटम्। असि। विष्णोः। पृष्ठम्। असि। विष्णोः। श्नप्त्रे इति। स्थः। विष्णोः। स्यूः। असि। विष्णोः। ध्रुवम्। असि। वैष्णवम्। असि। विष्णवे। त्वा ॥ [२७] ॥

(अस्ययच्छै कान्न चत्वारिꣳ शच्च) ॥ १३ ॥

कृणुष्व। पाजः। प्रसितिमिति प्र—सितिम्। न। पृथ्वीम्। याहि। राजा। इव। अमवा-नित्यम—वान्। इभेन॥ तृष्वीम्। अन्विति। प्रसितिमिति प्र—सितिम्। द्रूणानः। अस्ता। असि। विद्ध्य। रख्षसः। तपिष्ठैः॥ तव। भ्रमासः। आशुया। पतन्ति। अन्विति। स्पृश। धृषता। शोशुचानः॥ तपूꣳषि। अग्ने। जुह्वा। पतङ्गान्। असन्दित इत्यसं—दितः। वीति। सृज। विष्वक्। उल्काः॥ प्रतीति। स्पशः। वीति। सृज। तूर्णितम इति तूर्णि—तमः। भव। पायुः। विशः। अस्याः। अदब्धः॥ यः। नः। दूरे। अघशꣳस इत्यघ—शꣳसः। २८ (५०) ॥ [२८] ॥ यः। अन्ति। अग्ने। माकिः। ते। व्यथिः। एति। दधर्षीत्॥ उदिति। अग्ने। तिष्ठ। प्रति। एति। तनुष्व। नीति। अमित्रान्। ओषतात्। तिग्महेत इति तिग्म—हेते॥ यः। नः। अरातिम्। समिधानेति सम्—इधान। चक्रे। नीचा। तम्। धख्षि। अतसम्। न। शुष्कम्॥ ऊर्द्ध्वः। भव। प्रतीति। विद्ध्य। अधीति। अस्मत्। आविः। कृणुष्व। दैव्यानि। अग्ने॥

अवेति। स्थिरा। तनुहि। यातुजूनाम्। जामिम्। अजामिम्। प्रेति। मृणीहि। शत्रून्॥ सः। ते। २९ (५०) ॥ [२९] ॥ जानाति। सुमतिमिति सु—मतिम्। यविष्ठ। यः। ईवते। ब्रह्मणे। गातुम्। ऐरत्॥ विश्वानि। अस्मै। सुदिनानीति सु—दिनानि। रायः। द्युम्नानि। अर्यः। वीति। दुरः। अभीति। द्यौत्॥ सः। इत्। अग्ने। अस्तु। सुभग इति सु—भगः। सुदानुरिति सु—दानुः। यः। त्वा। नित्येन। हविषा। यः। उक्थैः॥ पिप्रीषति। स्वे। आयुषि। दुरोण इति दुः—ओने। विश्वा। इत्। अस्मै। सुदिनेति सु—दिना। सा। असत्। इष्टिः॥ अर्चामि। ते। सुमतिमिति सु—मतिम्। घोषि। अर्वाक्। समिति। ते। वावाता। जरताम्। ३० (५०) ॥ [३०] ॥ इयम्। गीः॥ स्वश्वा इति सु—अश्वाः। त्वा। सुरथा इति सु—रथाः। मर्जयेम। अस्मे इति। क्षत्राणि। धारयेः। अन्विति। द्यून्॥ इह। त्वा। भूरि। एति। चरेत्। उपेति। त्मन्न्। दोषावस्तरिति दोषा—वस्तः। दीदिवाꣳसम्। अन्विति। द्यून्॥ क्रीडन्तः। त्वा। सुमनस इति सु—मनसः। सपेम। अभीति। द्युम्ना। तस्थिवाꣳसः। जनानाम्॥ यः। त्वा। स्वश्व इति सु—अश्वः। सुहिरण्य इति सु—हिरण्यः। अग्ने। उपयातीत्युप—याति। वसुमतेति वसु—मता। रथेन॥ तस्य। त्राता। भवसि। तस्य। सखा। यः। ते। आतिथ्यम्। आनुषक्। जुजोषत्॥ महः। रुजामि। ३१ (५०) ॥ [३१] ॥ बन्धुता। वचोभिरिति वचः—भिः। तत्। मा। पितुः। गोतमात्। अन्विति। इयाय॥ त्वम्। नः। अस्य। वचसः। चिकिद्धि। होतः। यविष्ठ। सुक्रतो इति सु—क्रतो। दमूनाः॥ अस्वप्नज इत्यस्वप्न—जः। तरणयः। सुशेवा इति सु—शेवाः। अतन्द्रासः। अवृकाः। अश्रमिष्ठाः॥ ते। पायवः। सद्ध्रियञ्चः। निषद्येति नि—सद्य। अग्ने। तव। नः। पान्तु। अमूर॥ ये। पायवः। मामतेयम्। ते। अग्ने। पश्यन्तः। अन्धम्। दुरितादिति दुः—इतात्। अरक्षन्न्॥ ररक्ष। तान्। सुकृत इति सु—कृतः। विश्ववेदा इति विश्व—वेदाः। दिप्सन्तः। इत्। रिपवः। न। ह। ३२ (५०) ॥ [३२] ॥ देभुः॥ त्वया। वयम्। सधन्य इति सध—न्यः। त्वोताः। तव। प्रणीतीति प्र—नीती। अश्याम। वाजान्॥ उभा। शꣳसा। सूदय। सत्यतात इति सत्य—ताते। अनुष्ठुया। कृणुहि। अह्रयाण॥ अया। ते। अग्ने। समिधेति सं—इधा। विधेम। प्रतीति। स्तोमम्। शस्यमानम्। गृभाय॥ दह। अशसः। रक्षसः। पाहि। अस्मान्। द्रुहः। निदः। मित्रमह इति मित्र—महः। अवद्यात्॥ रक्षोहणमिति रक्षः—हनम्।

वाजिनम्। एति। जिघर्मि। मित्रम्। प्रथिष्ठम्। उपेति। यामि। शर्म॥ शिशानः। अग्निः। क्रतुभिरिति क्रतु—भिः। समिद्ध इति सं—इद्धः। सः। नः। दिवा। ३३ (५०) ॥ [३३] ॥ सः। रिषः। पातु। नक्तम्॥ वीति। ज्योतिषा। बृहता। भाति। अग्निः। आविः। विश्वानि। कृणुते। महित्वेति महि—त्वा॥ प्रेति। अदेवीः। मायाः। सहते। दुरेवा इति दुः—एवाः। शिशीते। श्रृङ्गे इति। रक्षसे। विनिक्ष इति वि—निक्षे॥ उत। स्वानासः। दिवि। सन्तु। अग्नेः। तिग्मायुधा इति तिग्म—आयुधाः। रक्षसे। हन्तवै। उ॥ मदे। चित्। अस्य। प्रेति। रुजन्ति। भामाः। न। वरन्ते। परिबाध इति परि—बाधः। अदेवीः ॥ [३४] ॥

(अघशं(ग्म्)सःस तेजरताः रुजामिह दिवैकचत्वारिंशच्च)।) ॥ १४ ॥

॥ हरिः ॐ ॥

प्रथमकाण्डे द्वितीयः प्रश्नः — पद पाठः — समाप्तः

अनुवाकाः	पञ्चशत्यः
१४	३४

ॐ